'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary
Impact Factor - (CIF) - 3.452, (SJIF) - 3.009, (GIF) -0.676 (2013)
Special Issue 40 : Globalization
UGC Approved No. 40705 & 44117
2348-7143
February
2018

जिंदगी की वास्तविकता की दास्तान : 'दौड़'

डॉ. अनिता नेरे (भामरे)
शोध निदेशक, श्रीमती पुष्पाताई हिरे महिला महाविद्यालय, मालेगांव-कैम्प,
तह. मालेगांव, जिला नाशिक (महाराष्ट्र)
संलग्न - सावित्रीबाई फुले विश्वविद्यालय, पुणे
E-mail : anitanere321@gmail.com, चलभाष - 09405177633

साठोत्तरी काल की महिला लेखिकाओं में अग्रेसर ममता कालिया का जन्म उत्तर प्रदेश के वृन्दावन में ३ नवम्बर, १९४० ई. में हुआ । इनकी प्रारंभिक शिक्षा इन्दौर, पुन और मुंबई में हुई । आप मुंबई तथा दिल्ली के महाविद्यालयों में अंग्रेजी की प्राध्यापिका रही । सन् १९७३ ई. से २००१ ई. तक इलाहाबाद के एक डिग्री कॉलेज में प्राचार्या पद पर नियुक्त रही । उसके उपरांत भारतीय भा॥ परिषद कोलकाता में निर्देशक रही है । इन्होंने अपना लेखन कार्य कविता से आरंभ किया । इसके साथ ही कहानी, उपन्यास तथा एकांकी भी लिखे हैं । बेघरनरक-दर-नरक, प्रेम कहानी, लड़कियाँ, एक पत्नी के नोट्स इन चर्चित उपन्यासों के बाद सन् २००० ई. में प्रकाशित 'दौड़' ममता कालिया का छठा लघु उपन्यास है ।

प्रस्तुत उपन्यास में बाजारवाद तथा उपभोक्तावाद के दुष्परिणामों पर प्रकाश डाला गया है । वर्तमान समय में आर्थिक उदारीकरण ने उपभोक्तावाद, बाजारवाद व्यवस्था को शक्ति प्रदान की है । बहुराष्ट्रीय कंपनियों के फैले जाल ने शिक्षित नवयुवक-युवतियों की आशा-आकांक्षाओं को फैलाया है । नई-नई तकनीकी शिक्षा यथा - एम.बी.ए., कम्प्यूटर इंजीनियर, सॉफ्टवेअर इंजीनियर तथा विज्ञापन जैसे क्षेत्र में नवयुवक अपना करियर करने लगे हैं । परंतु करियर बनाने की 'दौड़' में यह युवा पीढ़ी संवेदनहीन होकर घर-परिवार, संस्कृति, नैतिकता को तिलांजलि दे रहे हैं । इन्हीं बातों को ममता कालिया ने 'दौड़' में अंकित किया है । बाजारवाद में 'उपभोक्ता केन्द्र' में होता है, मनुष्य नहीं । 'दौड़' बाजार के दबाव-समूह, उनके परोक्ष अपरोक्ष मारक तनाव आक्रमण और निर्ममता, तथा अंधी दौड़ में नष्ट होते मनुष्य के आसन्न खतरे में पड़ी मानवता को उजागर करती है । इसके द्वारा मनुष्यों में प्राचीन पारंपरिक संबंधों की परंपरा और वर्तमान की जटिलताओं के मध्य विकराल होते संबंधों को दर्शाया है । बहुराष्ट्रीय कंपनियों के द्वारा दिया जाने वाला आकर्षक वेतन सुख-सुविधाएँ पाने की ललक हर युवा में है । नोकरी पाने की दौड़, विलासिता से परिपूर्ण जीवन जीने की छटपटाहट, संस्कारों के टूटते बंधन और आत्मकेंन्द्रित हो रही नई पीढ़ी इन बातों पर लेखिका ने प्रकाश डाला है ।

उपन्यास का प्रमुख पात्र है, पवन पाण्डे । इसके अलावा राकेश - रेखा (पवन के पिता - माता), सघन (भाई), स्टैला (पत्नी), अभिषेक शुक्ला, राजुल, अनुपम, शरद जैन, रोजविंदर कौर तथा मिस्टर और मिसेज सोनी आदि अन्य पात्र है । आज बाजारवाद, आर्थिक उदारीकरण, उपभोक्तावाद, जागतिकीकरण आदि संज्ञाएँ काफी प्रचलित हुई है । किंतु इनके कारण आदमी अर्थकेंद्रित बन गया है जिसमें सामाजिक और मानवीय संबंधों के मूल्य नष्ट हो गये है । मानव अपने दायित्व बोध से भटक गया है । ममता कालिया ने इस यथार्थबोध से परिचित कराने का सफल प्रयास 'दौड़' के द्वारा किया है । आज मनुष्य केवल धन कमाना चाहता है । उसे औरों की चिंता नहीं है । वह पारिवारिक रिश्ते-नातों को पैसे से तौलने लगा है । अतः इन्सानियत की पहचान लुप्त हो गयी है ।

आज के युवा वर्ग के सामने भूमण्डलीकरण के कारण विश्व के द्वार खुले है । ऐसी स्थिति में उपन्यास का नायक पवन पाण्डे एम.बी.ए. की डिग्री प्राप्त कर इलाहाबाद के जी.जी.सी.एल. कंपनी के एल.पी.जी. यूनिट में नोकरी करता है । यह नौकरी उसे रुपया तो देती है पर मानसिक स्वास्थ नही । पवन उन नवयुवकों का प्रतिनिधित्व करता हे जो एम.बी.ए. कर मशिन के पहिये की तरह दिन-रात कंपनी के हित में दौड़ लगाते रहते हैं । जहाँ कहीं थोड़ा-सा भी कंपनी का अहित हुआ कि इनकी नौकरी चली जाती है । फिर से दूसरी नौकरी की तलाश करनी पड़ती है । इस तरह बेहतर

Scanned with CamScanner

कल की आस में ये बेतहाशा दौड़ते रहते है । इसकी कोई अंतिम सीमा नहीं होती । उपन्यास में पवन, सघन, स्टैला, अभिषेक शुक्ला, शरद जैन आदि सब इस लंबी दौड़ के धावक है । ये अपना करियर (भविष्य) बनाने की दौड़ में पारिवारिक रिश्ते आपसी सद्भाव, नैतिकता, रीति-रिवाज से दूर जा रहे हैं । आज का शिक्षित युवक संस्कारों को पूरे तरह से भूल गया है । अपने माता-पिता उसे पुराने खयालात के लगते हैं । जिस गांव या शहर के कुएँ, तालाब या नदी का पानी पीकर वह बड़ा हुआ है, वही पानी अब उसे शरीर के लिए हानिकारक लगता है तथा वह ॲक्वागार्ड का पानी पीने की सलाह देता है । पवन को माँ की छोटी-छोटी बातों पर एतराज होने लगता है । वह जब छुट्टी लेकर कानपूर आता है तो उसकी माँ रेखा सोचती है कि रोज उसकी पसंद की डिश बनाकर खिलाएगी परन्तु पहले ही दिन पवन का पेट खराब हो जाता है । तब वह माँ से अक्वागार्ड लगाने की सलाह देता है । उसे अपनी जन्मभूमि का पानी रास नहीं आता। शादी के बारे में भी पवन और स्टैला को घरवालों की मर्जी की चिंता नहीं है । स्टैला इंटरप्राईज कार्पोरेशन में बराबर की पार्टनर है । उसकी कंपनी एल.पी.जी. गैस कंपनी को कम्प्यूटर सप्लाई करती है । एक दो बार पवन काम के सिलसिले में स्टैला के ऑफिस जाता है । यही परिचय बाद में प्रेम में परिणत होता है तथा वे दोनों शादी करने का निर्णय लेते हैं । कम्प्यूटर से दोनों ने जन्मपत्रियाँ मैच की और पवन ने घरवालों (माता-पिता) को फोन से खबर कर दी कि उसने लड़की पसंद कर ली है और वे अगले महिने शादी कर लेंगे । राकेश और रेखा पवन की इस खबर से हतबल हो जाते है । रेखा को स्टैला का शादी से पहले पवन की रुम पार्टनर बनकर रहना पसंद नहीं । यह नाराजगी जब वह व्यक्त करती है तो पवन उसे कहते है "तुमने देखा क्या है माँ ? इलाहाबाद से निकलोगी तो देखोगी न ! यहाँ सौराष्ट्र, गुजरात में शादी तय होने बाद लड़की महिने भर ससुराल में रहती है । लडका-लड़की एक-दूसरे के तौर-तरीके समझने के बाद ही शादी करते है ।"[१] जब तक रेखा राजकोट रहीं स्टैला उसके लिए कोई न कोई उपहार लाती । एक दिन स्टैला रेखा को एक गुलदस्ता देती है, जिसमें गिफ्ट कार्ड पर लिखा था स्टैला पवन की ओर से । शादी से पगले ही दोनों का नाम लिखना रेखा को अच्छा नहीं लगता । एक शाम वह रेखा के लिए शीशे की कढ़ाई की भव्य चादर लाती है । रेखा को रात में यह सपना बार-बार आता रहा कि उसके बिस्तर पर शीशे वाली चादर बिछी है । जिस करवट वह लेटती है उसके बदन में शीशे तटपट टूटकर चूभ रहे हैं । पवन अपनी शादी के लिए ज्यादा से ज्यादा चार दिन खाली रख सकता है । इस प्रकार उस जिद के आगे रेखा - राकेश को झुकना पड़ता है और मद्रास में स्वामीजी के आश्रम में सामूहिक विवाह में पवन और स्टैला शादी कर लेते है । वहाँ पर भी वह शॉर्ट कट ढूँढता है और एक घंटे में शादी की रस्म निभाता है । शादी जैसे पवित्र रस्म के लिए भी पवन और स्टैला के पास समय नहीं है । शादी के बाद रेखा और राकेश पवन और बहू को लेकर कानपुर आते है । रेखा अपने अनुसार स्टैला में पहनावे से लेकर रसोई तक परिवर्तन लाना चाहती है । रेखा स्टैला से कहती है कि वह उसे खाना बनाना सिखाएगी तो पवन माँ से कहता है "माँ जब से मैने होश संभाला तुम्हें स्कूल और रसोई की बीच दौड़ते ही देखा । मुझे याद है जब मैं सोकर उठता तुम रसोई मे होती और जब मैं सोने जाता, तब भी तुम रसोई में होती । तुम्हें चाहिए कि स्टैला के लिए जीवन भट्टी न बने । तुमने सहा वह क्यों सहे" कानपुर घर में दो दिन रहने के बाद पवन निकलते समय बीस हजार का चेक अपनी माँ को देता है और कहता है कि "माँ हमारे आने से आपका बहुत खर्च हुआ है, यह मैं आपको पहली किस्त दे रहा हू । वेतन मिलने पर और दूंगा" माँ पवन की इस बात से बेहद दु:खी होती है और चेक वापस कर देती है । अर्थात् पवन के लिए माता-पिता का घर होटल जैसा हो गया है । पवन और स्टैला कैरियर के लिए शादी के बाद हजारों मील दूर रहते है । फोन, इंटरनेट के जरिये ही उनका वैवाहिक जीवन पलता है । बच्चों की उन्हें जल्दी भी नहीं है, क्योंकि उनकी दृष्टि में कैरियर पहले फिर परिवार। पैसा उनके जीवन का लक्ष्य बन चुका है ।

पवन का छोटा भाई सघन भी सॉफ्टवेअर कंपनी से बुलावा आने पर ताईवान जाने की तैयारी करता है । तब राकेश उसे हवाई जहाज के टिकट का इंतजाम कर देते है तो वह भी पवन जैसे ही कहता है कि आपका खर्च में

Scanned with CamScanner

मैं से चुका दूँगा । वह इतनी आसानी से कहता है मानो वह अपने पिता से नहीं किसी होटल मालिक से कह रहा है । आज के युवाओं की 'मनी माइंड' सोच से आपसी रिश्तों में तनाव निर्माण हो रहा है । सघन ताइवान में नौकरी के साथ-साथ राजनीति में भी हिस्सा लेने लगता है । ऐसी स्थिति में दुष्परिणामों की आशंका से राकेश और रेखा उसे वापस बुलाना चाहते हैं। वे उसे अपने देश में कार उद्योग स्थापित करने के लिए कहते है। इसके उत्तर में सघन आर्थिक नियोजन की बात करता है । वह पिता से कहता है कि मुझे कम से कम तीस-चालीस लाख की जरुरत होगी, तभी में हिन्दुस्थान लौट सकूँगा । सघन पिता से कुछ पैसों का इंतजाम करने के लिए कहता है तब राकेश अपने घर की आर्थिक स्थिति बताते हुए मजबूरी व्यक्त करते हैं । सघन चिढ़कर उन्हें कहता है, "आपने इतने बरसों में क्या किया ? दोनों बच्चों का खर्च आपके सिर से उठ गया । घूमने आप जाते नहीं, पिक्चर आप देखते नहीं, दारु आप पिते नहीं, फिर आपके पैसों का क्या हुआ ?"(४) इस प्रकार सघन अपने पिता से पैसों का हिसाब मांगता है । यही सबसे बड़ी त्रासदी है बाजारवाद, उपभोक्तावाद की । हर कोई चीज, रिश्ता आज पैसों पर तोला जाने लगा है । जो माँ-बाप अपनी इच्छा-आकांक्षाओं को मारकर एक-एक पैसा जोड़कर बच्चों को पढ़ाते है, एम.बी.ए., सॉफ्टवेयर इंजीनियर बनाकर विदेश भेजते हैं, वहीं आगे चलकर अपने माता-पिता से पैसों का हिसाब माँगते हैं ।

लेखिका ने यह भी दर्शाया है कि यह पीढ़ी धनोपार्जन और कैरियर बनाने की दौड़ में अपने माता-पिता को अकेला छोड़कर देश-विदेश के अन्यत्र शहरों में स्थापित होते हैं । ऐसी स्थिति में प्रौढ माता-पिता एकाकी जीवन यापन करते है । उपन्यास में कॉलोनी के ही मिस्टर सोनी का दिल का दौरा पड़ने से मृत्यु हो जाती है तो सिद्धार्थ अपनी माँ से फोन पर ही बात करता है और कहता है, "आप ऐसा कीजिए, इस काम के लिए किसी को बेटा बनाकर दाह-संस्कार करवाइए । मेरे लिए तेरह दिन रुकना मुश्किल होगा ।"(५) क्योंकि इसने अमरिका में देखा था कि शव का मुरदाघर में रखकर जब बच्चों को फुर्सत मिलती है तब दाह-संस्कार करवाते हैं । इसी करण सिद्धार्थ वैसी ही बात करता है । अर्थात इस पीढ़ी के पास इतनी भी फुर्सत नहीं कि वे माता-पिता का दाह-संस्कार समय पर कर सके । बाजारवाद की यह सबसे बड़ी त्रासदी है । किंतु इस आकस्मिक घटना से सबक लेकर कॉलोनी के सभी लोगों ने अपने वसीयतनामे संभाले और बैंक खातों के ब्यौरे भी । बाजारवाद की विभीषिका के कारण पारिवारिक और सामाजिक स्तर पर रिश्ते टूट रहे हैं । साथ ही नैतिकता, उत्तरदायित्व, पाप-पुण्य जैसे शब्द अपना अर्थ खो चुके हैं । बाजारवाद ने सचमुच समाज की बुनियाद हिला दी है । अब तो हर कोई पढ़-लिखकर विदेश जाना चाहता है । वहाँ से वापस लौटना नहीं चाहता । शहर की कालोनियाँ सुनी पड़ रही है । हर घर में यही हालत है । केवल दिवाली या गर्मी की छुट्टियों में उनके घरों में चहल-पहल होती है । बाकी दिन तो खामोशी छायी रहती है । बच्चों के चले जाने से शहर की कॉलोनियाँ सिनियर सिटीजन की कालोनियाँ बनती जा रही है । घर में केवल एक बूढ़ा, एक बूढ़ी, एक कुत्ता और एक कार दिखाई देती है । लेखिका कहती है, "अंतिवासी और प्रवासी केवल पर्यटक और पंछी ही नहीं होते, बच्चे भी होते है ।"(६) बहुत बड़ा मार्मिक व्यंग्य इसमें निहित है । आलोच्य उपन्यास में ममता कलिया ने 'वरिष्ठ नागरिक आवासों' की आवश्यकता प्रतिपादित की है । युवा पीढ़ी अपने पैरों पर खड़ा होने पर उसका परिवार पत्नी तथा बच्चों तक सीमित हो जाता है । ऐसी स्थिति में माता-पिता को लाचारी-अभाव की जिन्दगी बितानी पड़ती है । माता-पिता की उपेक्षा कर यह युवा पीढ़ी अपने कर्तव्यों से विमूढ़ हो रही है । ऐसी स्थिति में यह प्रौढ़ लोग अपने बीते हुए समय की याद करके विचलित हो जाता है और अपने समवयस्क लोगों के साथ सुख-दुख बाँटना चाहते हैं । उन्हे बेहद पीड़ा तब होती है जब दाह संस्कार जैसे दायित्वों से भी युवा वर्ग कट जाता है और किराए का बेटा बनाने का विकल्प प्रस्तुत करते है । उपन्यास के सभी प्रौढ़ पात्रों की लगभग यही मानसिकता है 'वरिष्ठ नागरिक आवास' बने ।

इस बाजारवाद की विभीषिका का दूसरा पहलू यह भी है कि आज उपभोक्ता को प्रभावित करने के लिए एक से बढ़कर एक उपाय ढूँढ लिये जाते हैं । यही कारण है कि शरद जैन को चिंता है कि उनकी कंपनी का पॉलिश कैसे बिके

Scanned with CamScanner

क्योंकि भारत में दस प्रतिशत लोग ही चमड़े के जूते पहनते हैं । उसमें भी रोज नई-नई कंपनियों की स्पर्धा बढ़ रही है । इसीलिए शरद की कंपनी स्कूली बच्चों को लुभाने में लगी है । दूसरी और राजविंदर कौर प्रदुषण पर रिपोर्ट तैयार कर रही है । उसकी कंपनी हवा शद्धिकरण का सयंत्र बनाने जा रही है ओर एक हर्बल स्प्रे भी बनाने वाली है । नाक के पास हर्बल स्प्रे किया तो धुएँ का प्रदुषण साँस के रास्ते अंदर नहीं जाएगा । पवन जलराम बाबा के शक्ति पीठ के पुजारी को एल.पी.जी. गैस का महत्त्व समझाकर छह गैस कनेक्शन का ऑर्डर हासिल करता है । कुछ ही देर में जलराम बाबा के भक्तों और समर्थकों में खबर फैल जाती है कि बाबा ने एल.पी.जी. गैस इस्तेमाल करने का आदेश दिया है । इस प्रकार देखते ही देखते शाम तक पवन ने दो सौ चौसठ गैस कनेक्शन ऑर्डर प्राप्त किया । इसी तरह अभिषेक शुक्ला विज्ञापन कंपनी में काम करता है । वह स्पार्कल कंपनी के टूथपेस्ट का विज्ञापन बनाता है । उसे अच्छी तरह मालूम है कि टूथपेस्ट का विज्ञापन करने वाली मॉडल लीना स्वयं दूसरी कंपनी का टूथपेस्ट इस्तेमाल करती है । पर बाजारवाद में विज्ञापनों की दुनिया सच पर टिकी नहीं है । उसमें झूठ बोला जाता है और झूठ के सहारे चीजों को बेचा जा रहा है । उनमें नैतिकता कहीं भी नहीं है । इसीलिए अभिषेक अपनी पत्नी राजुल से कहता है, "सच्चाई तो यह है कि मॉडल लीना भी स्पार्कल इस्तेमाल नहीं करती । वह प्रतिद्वन्द्वी कंपनी का टिक्को इस्तेमाल करती है । पर हमें सच्चाई नहीं प्रॉडक्ट बेचनी है ।"(७) वर्तमानयुग तकनीकी युग है । आज समाज पर उपभोक्ता संस्कृति पूर्ण रुप से हावी हो चुकी है । ऐसी स्थिति में विज्ञापनों के माध्यम से समस्त उत्पादों को उपभोक्ताओं तक पहुँचाया जा रहा है । अनेकानेक कंपनियों में इस बात को लेकर होड़ लगी है कि उनका ही प्रॉडक्ट कैसे अच्छा हो । इसी कारण कभी-कभी छल-कपट का सहारा लेकर लोगों को फँसाया जा रहा है । इन कंपनियों ने नैतिकता को ताक पर रख दिया है ।

इस बाजारवाद में हर कोई तनाव में रहता है । मन की शांति के लिए लोग अध्यात्म की ओर आकर्षित हो रहे है। उपन्यास में कृष्णा स्वामी जैसी लोग ध्यान शिबिरों का आयोजन करते है, जहाँ इंजीनियर, डॉक्टर, मेनेजर, बड़े-बड़े अफसर अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहे है ।

इस प्रकार जिन्दगी के दौड़ पर ही इस उपन्यास का शीर्षक 'दौड़' सत्य प्रतीत होता है । यह कहानी केवल 'दौड़' के पवन, सघन या सिद्धार्थ की नहीं है बल्कि इनके माध्यम से लेखिका ने उस पीढ़ी का चित्रण किया है जिनके सामने अपने कैरियर से सिवा और कोई लक्ष्य नहीं है । हिन्दी के एक समिक्षक खगेंन्द्र ठाकुर के अनुसार, "दौड़ भूमण्डलीकरण, व्यावसायिकता, आजीविकावाद, विज्ञापनबाजी, उपभोक्तावाद आदि के मिश्रण से बने मनुष्यों की कहानी बहुत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है । बेशक इस दौड़ ने नवधनाढ्य वर्ग की नई पीढ़ी के चरित्र के माध्यम से हिन्दी कथा-साहित्य में एक प्रतिमान या कीर्तिमान कायम किया है ।"(८) दूसरे एक समीक्षक कृष्ण मोहन लिखते है, "बीसवी सदी के अंत में भारतीय समाज के सबसे गहरे सांस्कृतिक संकट का आख्यान है "दौड़" ।(९) इस तरह इन प्रतिक्रियाओं से "दौड़" उपन्यास का महत्त्व स्पष्ट होता है ।

संदर्भ :-

१. दौड़ - ममता कालिया.
२. दौड़ - ममता कालिया, पृ.६३.
३. दौड़ - ममता कालिया, पृ.६८.
४. दौड़ - ममता कालिया, पृ.५८.
५. दौड़ - ममता कालिया, पृ.८१.
६. दौड़ - ममता कालिया, पृ.७३.
७. दौड़ - ममता कालिया, पृ.३७.
८. दौड़ - ममता कालिया, (संस्करण २००९) लेखिका के द्वारा उद्धत पत्रो में से पृ.७.
९. दौड़ - ममता कालिया, (संस्करण २००९) लेखिका के द्वारा उद्धत पत्रों में से पृ.७.

Scanned with CamScanner